

भगत रविदास – सबद २६
जो दिन आवहि सो दिन जाही ॥
राग सूही, भगत रविदास, गुरु ग्रंथ साहिब, ७९३

जो दिन आवहि सो दिन जाही ॥
करना कूचु रहनु थिरु नाही ॥
संगु चलत है हम भी चलना ॥
दूरि गवनु सिर ऊपरि मरना ॥ १ ॥
किआ तू सोइआ जागु इआना ॥
तै जीवनु जगि सचु करि जाना ॥ १ ॥ रहाउ ॥
जिनि जीउ दीआ सु रिजकु अंबरावै ॥
सभ घट भीतरि हाटु चलावै ॥
करि बंदिगी छाडि मै मेरा ॥
हिरदै नामु सम्मारि सवेरा ॥ २ ॥
जनमु सिरानो पंथु न सवारा ॥
साँझ परी दह दिस अंधिआरा ॥
कहि रविदास निदानि दिवाने ॥
चेतसि नाही दुनीआ फन खाने ॥ ३ ॥ २ ॥

सार: हम योजना बनाते हैं, निर्णय लेते हैं और अपने कामों का श्रेय लेते हैं लेकिन हमारी यात्रा का ज़्यादातर हिस्सा हमारे नियंत्रण से बाहर की शक्तियों से आकार लेता है, जैसे सांस, जन्म और मृत्यु। इस बात को समझने से हमारा दृष्टिकोण, अहंकार से मुक्त स्पष्टता ला सकता है। जैसे-जैसे हम सजगता विकसित करते हैं, हमें दिखता है कि हमारे प्रयास महत्त्वपूर्ण हैं इसपर तनाव का बोझ हल्का हो जाता है। उपलब्धियां आवश्यक बनी रहती हैं लेकिन हम अपने मूल्य को सिद्ध करने के लिए घमंड नहीं पालते। इसके बजाय, हम उस अदृश्य बुद्धि के प्रति कृतज्ञ होते हैं जो हम सबको जोड़ती

है। यह समझ शांति की गहन भावना पैदा करती है जो क्षणिक भावनाओं से बदलकर स्थायी शांति में बदल जाती है।

जो दिन आवहि सो दिन जाही ॥

जो दिन आता है, वह दिन बीत भी जाता है। यह प्राकृतिक क्रम समय की क्षणिक प्रकृति और भौतिक संसार की नश्वरता को उजागर करता है, हमें हर पल को संजोने की याद दिलाता है।

करना कूचु रहनु थिरु नाही ॥

प्रस्थान अनिवार्य है, कुछ भी स्थायी रूप से स्थिर नहीं रहता। यह वास्तविकता दर्शाती है कि जैसे भौतिक जगत निरंतर बदल रहा है वैसे ही हमारे विचारों का विकसित होना आवश्यक है।

संगु चलत है हम भी चलना ॥

हमारे साथी जा रहे हैं और हमें भी जाना है। यह भौतिक अस्तित्व की नश्वरता को स्वीकार करता है, दूसरों को जाते हुए देखना समय के माध्यम से हमारी अपनी यात्रा की याद दिलाता है।

दूरि गवनु सिर ऊपरि मरना ॥ १ ॥

हमें बहुत दूर यात्रा करनी है और मृत्यु सिर पर खड़ी है। यह दर्शाता है कि चेतना की ओर हमारा विकास धीमा है, यह हमारे न्यूनतम प्रयासों का प्रतीक है जबकि अस्तित्व की अनिवार्यता हमें पहले से ज्ञात है। (१)

किआ तू सोइआ जागु इआना ॥

हे अज्ञानी मन, तुम क्यों सो रहे हो ? जागो, यह कर्म की कार्रवाई करने के लिए एक महत्वपूर्ण आह्वान है जो हमें अज्ञान और आत्म-भ्रम की नींद से मुक्त होने के लिए प्रेरित करता है।

तै जीवनु जगि सचु करि जाना ॥ १ ॥ रहाउ ॥

तुमने गलती से इस सांसारिक जीवन को ही अंतिम सत्य मान लिया है। यह क्षणिक भ्रमों को स्थायी यथार्थ मानने की मूलभूत बौद्धिक भ्रांति को दर्शाता है। (१)(विराम)

जिनि जीउ दीआ सु रिजकु अंबरावै ॥

जो रचनात्मक ऊर्जा जीवन के रूप में प्रकट होती है वही उसके पालन-पोषण को भी सुनिश्चित करती है। यह दर्शाता है कि दुनिया की भलाई के लिए चीजें जमा करने का विचार अनावश्यक और नुकसानदायक है।

सभ घट भीतरि हाटु चलावै ॥

संपूर्ण अस्तित्व के हर हिस्से में वही चेतना अपना व्यापार चला रही है। यह याद दिलाता है कि हमारे अहंकार के नियंत्रण-भ्रम के दावों के नीचे व्यक्तिगत इच्छा से कहीं ज़्यादा गहरी सत्ता कार्यरत है, जैसे श्वास और जीवन की धड़कन।

करि बंदिगी छाडि मै मेरा ॥

श्रद्धा अपनाएं ताकि स्वयं को जोड़ सकें और 'मैं' तथा 'मेरा' को छोड़ दें। यह परिवर्तन भक्ति को केवल अनुष्ठान से ऊपर उठाकर अहं-आधारित स्वामित्व और आत्म-महत्व के त्याग में बदल देता है।

हिरदै नामु सम्मारि सवेरा ॥ २ ॥

अपनी चेतना में, सुबह के पल के रूप में चिंतन को बनाए रखें। यह प्रतीक है कि जब भी भ्रम के बाद स्पष्टता लौटती है, वही जागरण का क्षण होता है जिसको सुबह के उदय के रूप में देखा जा सकता है, जो अंधेरे के बाद प्रकाश लाता है। (२)

जनमु सिरानो पंथु न सवारा ॥

जीवन ढल गया फिर भी जीवन जीने का तरीका नहीं सुधरा है। यह मौक़े के चूकने को दर्शाता है क्योंकि जब हम भीतर के बजाय बाहर पर ध्यान देते हैं तो हमारी आध्यात्मिक प्रगति रुक जाती है।

साँझ परी दह दिस अंधिआरा ॥

शाम उतर आई है और दसों दिशाओं में अंधेरा छा गया है। यह आने वाले अंत की निकटता की याद दिलाता है और जागरूकता के अभाव से उपजी भय व भ्रम की स्थिति को दर्शाता है।

कहि रविदास निदानि दिवाने ॥

रविदास कहते हैं, मन अज्ञानी और भटका हुआ है। यह एक ऐसी मानवीय स्थिति को दिखाता है जहां आत्म-जागरूकता की कमी है और व्यक्तिगत विकास और ज्ञान पर ध्यान केंद्रित करने में असमर्थता है।

चेतसि नाही दुनीआ फन खाने ॥३॥२॥

तुम्हें अभी भी एहसास नहीं है कि यह संसार एक नश्वर घर है। यह मोह को छोड़ने में विफलता को उजागर करता है जो दुःख का मूल कारण है। (३)(२)

तत्त्व: भगत रविदास हमें अपने भीतर की सूक्ष्म जागरूकता को पहचानने के लिए प्रेरित करते हैं जहाँ अगर हम अपनी अंतरात्मा पर ध्यान दें तब स्पष्टता उभर सकती है, नहीं तो, इसे आसानी से अनदेखा किया जा सकता है। वह समय की क्षणभंगुर प्रकृति पर ज़ोर देते हैं, हमें याद दिलाते हैं कि जीवन हमेशा गति में है और हम सच में किसी भी चीज़ के मालिक नहीं हो सकते क्योंकि हमारा शारीरिक रूप से चले जाना अस्तित्व का एक अभिन्न अंग है। जिसे हम अक्सर जमा करने से सुरक्षा समझते हैं, वह असल में बोझ बन सकता है। सार्थक बदलाव तब होता है जब हम अहं-केंद्रित मोह से हटकर आंतरिक-केंद्रित जागरूकता की ओर बढ़ते हैं। खुलेपन की इस अवस्था में, जीवन न तो कसकर पकड़ने योग्य रहता है, न ही त्यागने योग्य बल्कि यह हमें हर पल को जैसे-जैसे वह सामने आता है, स्पष्टता और स्थिर उपस्थिति के साथ जीने के लिए आमंत्रित करता है।

सबद व्याख्या विनइंदर कौर और अमरदीप सिंह

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com